OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 2 [Mar- Apr] Year 2026*

IJCRM

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

1857 ई. की क्रांति में रानी लक्ष्मीबाई की भूमिका: एक नवीन दृष्टिकोण

डॉ. जय प्रकाश सिंह *

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, इतिहास, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांदा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: *डॉ. जय प्रकाश सिंह

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19703703

सारांश

1857 की क्रांति भारतीय इतिहास का प्रथम संगठित स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है। इस आंदोलन में अनेक नायकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिनमें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जगमगाती दीपशिखा शौर्य की सजीव प्रतिमा महारानी लक्ष्मीबाई केवल झाँसी की ही नही,भारत की ही नही अपितु विश्व की उन वीरांगनाओं में एक है जिनकी गिनती उंगलियों में की जा सकती है। वह लक्ष्मी नाम है, जिसने जनमानस में नारी के प्रति स्थापित कल्पना को परिवर्तित कर उसे अबला के स्थान पर सबला ,कोमलांगी के स्थान पर वज्रांगना और रमणी के स्थान पर रणचण्डी के रूप में प्रस्थापित किया। उसने सिद्ध कर दिखाया कि चूडियाँ धारण करने वाली कोमल कलाइयाँ जब तलवार धारण करती है तो उसकी झन-झन में भैरवी साकार हो उठती है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने जिस बहादुरी और वीरता के साथ अंग्रेजो के विरुद्ध लडाइयाँ लड़ी वह भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। आज भी समस्त भारतवासी रानी लक्ष्मीबाई की वीरता की गाथा गा-गा कर अपने अन्दर उत्साह और साहस भरतें है । *सर ह्यूरोज* ने रानी लक्ष्मीबाई की प्रशंसा में अपनी डायरी में लिखा था, कि महारानी का उच्च कुल आश्रितों और सिपाहियों के प्रति उनकी असीम उदारता एवं कठिन समय में भी अडिग धीरज उनके इन गुणों ने रानी को हमारा एक अजेय प्रतिद्वन्दी बना दिया, वह शत्रु दल की सबसे बहादुर और सर्वश्रेष्ठ सेना की नेत्री थी ।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 10-03-2026
- **Accepted:** 03-04-2026
- **Published:** 23-04-2026
- **IJCRM:**5(2); 2026: 763-768
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सिंह ज प्र. 1857 ई. की क्रांति में रानी लक्ष्मीबाई की भूमिका: एक नवीन दृष्टिकोण. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(2):763-768.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: वीरांगना, स्वतंत्रता संग्राम, रानी लक्ष्मीबाई, महारानी, झांसी, लार्ड डलहौजी, दामोदर राव, सरदार, मरदाना वेश, भारतवासी, कालपी, क्रांतिकारी।

© 2026 डॉ. जय प्रकाश सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. परिचय

भारतीय इतिहास में अनेक वीरांगनाओं ने अपने साहस, त्याग और देशभक्ति से एक अमिट छाप छोड़ी है। उन्हीं में से एक महान व्यक्तित्व हैं महारानी लक्ष्मीबाई, जिन्हें झाँसी की रानी के नाम से जाना जाता है। वे केवल एक शासिका ही नहीं, बल्कि स्वतंत्रता, स्वाभिमान और नारी शक्ति की प्रतीक भी थीं। 19वीं शताब्दी में जब भारत अंग्रेजी शासन के अधीन था और भारतीय रियासतों पर कब्जा करने की नीति अपनाई जा रही थी, तब रानी लक्ष्मीबाई ने साहस और दृढ़ संकल्प के साथ अपने राज्य एवं अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष किया। 1857 की क्रांति में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही।रानी लक्ष्मीबाई का जीवन इस बात का प्रमाण है कि कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य, साहस और आत्मसम्मान के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया। उनका संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में एक प्रेरणादायक अध्याय के रूप में सदैव याद किया जाएगा।

2. शोध का उद्देश्य-

1. रानी लक्ष्मीबाई के जीवन और व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
2. 1857 की क्रांति में उनकी भूमिका का विश्लेषण करना।
3. रानी लक्ष्मीबाई के योगदान का ऐतिहासिक मूल्यांकन करना।
4. भारतीय स्वाधीनता आंदोलन पर रानी लक्ष्मीबाई के प्रभाव को समझना।

3. शोध प्रविधि-

यह शोध मुख्य रूप से ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें द्वितीयक स्रोतों जैसे इतिहास की पुस्तकों, शोध लेखों, एवं दस्तावेजों का उपयोग किया गया है।

4. विश्लेषण

रानी लक्ष्मीबाई का जन्म-

रानी लक्ष्मीबाई के पिता मोरोपन्त ताम्बे महाराष्ट्र के रहने वाले थे । वे सतारा के निकट बाई नामक एक गाँव के निवासी थे । मोरोपंत के पिता बलवन्तराव पेशवाई सेना में उच्च पद पर थे । 1818 में अंग्रेजो द्वारा पेशवाई समाप्त करने पर बाजीराव के भाई चिमांजी अप्पा साहब बनारस चले गये और उन्ही के साथ मोरोपन्त भी बनारस पंहुचे । वहीं पर 19 नवम्बर 1835 को मोरोपन्त की पत्नी भागीरथ बाई की गर्भ से मनु का जन्म हुआ।[1] उस समय इस दम्पति ने स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि एक दिन उनका नाम इतिहास में अमर हो जायेगा । जैसे कंटीली डालियों को यह नही पता होता कि बसंत में उन्ही के बीच में एक गुलाब फूलेगा जिसकी गन्ध से सारा विश्व जगमगा उठेगा। चिमांजी के निधन के बाद बाजीराव ने मोरोपन्त को बिठूर बुला लिया और यहीं पर मनु की शिक्षा दीक्षा हुई ।मनु बचपन से ही बड़ी चतुर,चपल किशोरी के रूप में बिठूर में प्रसिद्ध हो गई थी किन्तु पिता मोरोपन्त द्वारा बाल जीवन में मिली शिक्षा प्रसंग ने उसके बाल चिन्तन को एक नया आयाम प्रदान कर दिया था । जब कोई भी ऐसा प्रकरण आता था जिसमें उसे लगता था कि पिता मोरोपन्त सम्बन्धित प्रश्न टाल रहे है,तब मनु उन्हे उन प्रसंगो और उद्दरणों की याद दिलाती थी जो उसे मोरोपन्त ने बचपन में सुनाये थे । इन बिन्दुओं से तथ्य सुस्पष्ट होता है कि मनु के बचपन में गम्भीरता का भी क्रमशः विकास हो रहा था। [2]

विवाह के पूर्व जब मनु एंव उसके पिता झाँसी आये तो उन्हे झाँसी के कोठी में ठहराया गया था। मनु की सेवा के लिये कुछ परिचारिकायें भेजी गयी थी। जिनमें सुन्दर, मुन्दर एवं काशी सहित अनेक थी। मनु के समक्ष जब इन परिचारिकाओं ने अपना नाम पता इत्यादि बताकर अपने आपको दासी के रूप में प्रस्तुत किया तो मनु ने साफ शब्दों में कहा कि मेरी दासी कोई नहीं होगी, तुम लोग मेरी सिर्फ सहेली हो सकोगी । मनु का विवाह 1842 ई.में झाँसी के राजा गंगाधर राव से हो गया और वह झाँसी की महारानी हो गई ।[3] गंगाधर राव बहुत योग्य और आदर्श राजा थे । वे बडे प्रेम से रानी की बातें सुनते थे। रानी लक्ष्मीबाई का बडा सम्मान होता ,वह पूजा पाठ करने के अलावा मल्लयुद्ध स्वयं करती और कुछ स्त्रियों को भी उसकी शिक्षा देती थी ।

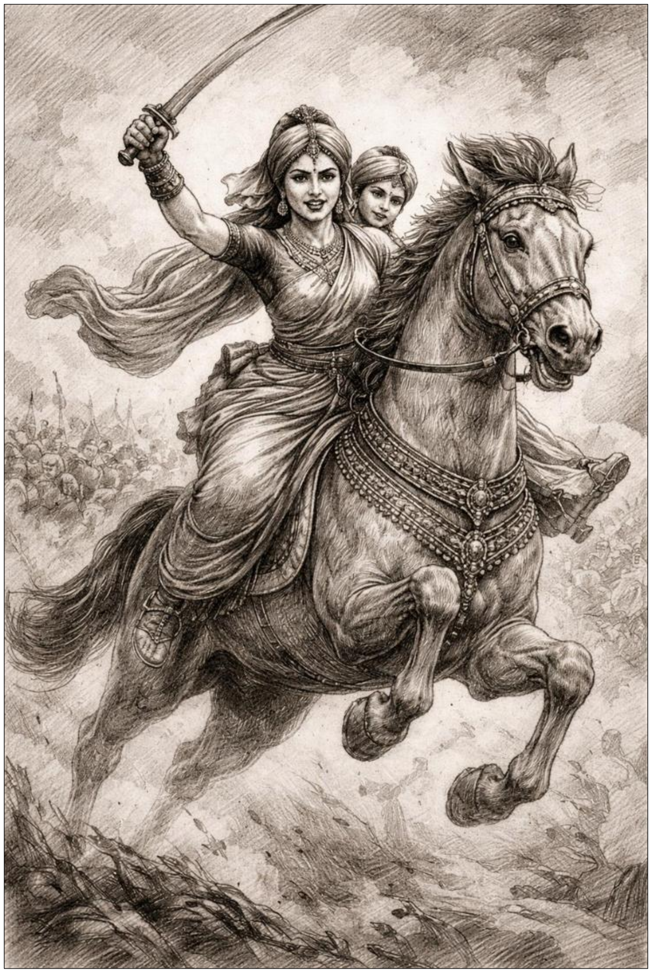

चित्र 1: महारानी लक्ष्मीबाई की काल्पनिक फोटो

उस समय राज परिवार की महिला कुश्ती लडने, घुडसवारी करने, और युद्ध विद्या की शिक्षा दी जाती थीं। 1851 में रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसे सुनकर सम्पूर्ण झाँसी आनन्दित हो उठी और सम्पूर्ण झाँसी में पुत्रोत्सव मनाया गया । रानी प्रसव के बाद दो माह तक पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो पायी थी, इसी बीच रानी की देश के हालात पर तात्या टोपें से बात हुई। रानी ने तात्या टोपे से दिल्ली और लखनऊ का हाल पूछा। इस पर तात्या ने उत्तर दिया कि नबाबों और नरेशों को रंग मचींय शांम

© 2026 डॉ. जय प्रकाश सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

से फुरसत ही नहीं है। उधर संयोग से तीन महीने बाद ही पुत्र चल बसा,राज परिवार में पुनः निराशा छा गई, रानी हतप्रभ हो गई और राजा शोक सागर म में डूब गया।दुर्भाग्यवश गंगाधर राव अस्वस्थ हो गये उन्हे बचाने की भरपूर चेस्टा की गई ।[4] पर कुछ फल न निकला और उनका देहावसान 21 नवम्बर 1853 को हो गया। मृत्यु से पहले महाराजा गंगाधर राव ने आनन्द राव नाम के एक पाँच वर्षीय बालक को गोद ले लिया था उसका नाम दामोदर राव रखा गया। इसके कुछ ही दिन बाद महाराज चल बसें । महारानी 18 वर्ष की छोटी सी उम्र में ही विधवा हो गई । उस समय भारत में अंग्रेजी राज्य के विस्तार के लिये लार्ड डलहौजी की कूट नीति चल रही थी उन्होने मेजर एलिस को भेजकर झाँसी के राजकीय खजाने को सीलबन्द कर दिया । गंगाधर राव के दत्तक पुत्र को अवैध घोषित कर दिया और रानी को पांच हजार रूपये वार्षिक पेन्शन देकर राजमहल खाली करने का आदेश दे दिया ।

रानी लक्ष्मीबाई का झांसी की रानी बनना-

गंगाधर राव की अन्तिम वसीयत के अनुसार दामोदर राव के वयस्क होने तक लक्ष्मीबाई राज्य की उत्तराधिकारिणी बनी। रानी ने अपने शासनाधिकार को बनाये रखने का काफी प्रयत्न किया लेकिन सब व्यर्थ हो गया । पजाब के सिख, बंगाल के नबाब और महाराष्ट्र के पेशवा सभी तो घुटने टेक चुके थे। कोई न कोई बहाना बनाकर या वारिस न होने पर राज्य कम्पनी की हुकूमत में मिला लिये करते थें। झाँसी राज्य भी इसी तरह 1854 में अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। रानी विवश होकर अपने पुत्र के साथ एक किराये के मकान में रहने लगी। रानी ने मन ही मन झाँसी की आजादी के लिये भारत माँ को गुलामी से मुक्त करानें के लिये प्रतिज्ञा की थी।[5] भारत के लोग अत्याचार सहते-सहते ऊब गये थे कोई दूसरा रास्ता न देखकर रानी ने ब्रिटिश'सरकार के खिलाफ क्रान्ति करने का निश्चय किया ।

1857 की क्रांति में योगदान-

4 जून 1857 को झाँसी में क्रान्ति की लहर दौड पड़ी।[6] 4 जून को झाँसी के सैनिकों नें अंग्रेज सरकार के खिलाफ क्रान्ति आरम्भ कर दी जिसका नेतृत्व गुरबख्श सिंह कर रहा था। 7 जून को रिसालेदार काले खाँ, तहसीलदार महमूद हुसैन तथा झाँसी के कुछ अन्य बहादुरों के नेतृत्व में झाँसी के दुर्ग पर आक्रमण कर क्रान्ति की पताका फहरा दी गई । अंग्रेजों ने आत्मसमर्पण कर दिया ।उन्हाने आपने अस्त्र-शस्त्र रख दिये और दुर्ग का द्वार खोल दिया। झाँसी की जनता बदला लेने के लिये तड्प रही थी और उन्हे पता था कि जनरल नील ने'किस प्रकार गाँव के गाँव जलाकर उनके बाल बच्चों की हत्या कर दी है। मारों फिरंगियों को, के नारे से आकाश गुंजायमान हो उठा ।अनेक सैनिकों के सर काट डाले गये ।अंग्रेजो ने झाँसी की रानी को ही इस हत्याकाण्ड के लिये दोषी ठहराया । परन्तु मनुष्य अपने पाप का फल आज या कल प्राप्त करता ही है। डलहौजी की दमन नीति और उसके अत्याचार के फलस्वरूप ही अनेक अंग्रेज गोलियों के शिकार हुये । क्रांतिकारी जय घोष कर रहे थे कि,"खल्क खुदा का मुल्क बादशाह का और अमल रानी लक्ष्मीबाई का "। समस्त सैनिकों के आक्रोश को देखकर रानी ने क्रान्ति का झण्डा अपने हाथ में लें लिया और अपनी खोई झाँसी प्राप्त किया । दामोदर राव अभी नाबालिंग था इस लिये शासन की बागडोर रानी ने अपने हाथ में रखी ।

महारानी ने अपने हाथ में आई सत्ता का बडी योग्यता से संचालन किया । सुरक्षा की व्यवस्था मजबूत की गई । तोप-बारूद झाँसी में ही बनाये जाने लगे । सेना भर्ती शुरू हुई । रानी की सेना में हिन्दू,पठान सभी थें । झाँसी के महल पर दिल्ली के बादशाह की पताका फैला दी गई। कम्पनी का झण्डा उठा दिया गया। प्रजा रानी के राज्य में सुख और शान्ति से रहने लगी । रानी सदा सतर्क रहती । रानी लक्ष्मीबाई ने घोषणा की कि "मैं अपनी झाँसी कभी नही दूँगी"।[7] रानी की ललकार से क्रान्तिकारियों में दुगुना जोश पैदा हुआ। क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजो को मार भगाया, झाँसी तथा उसके आस पास के गाँव जैसे नौगांव, बाँदा, शाहगढ़ अंग्रेजी सत्ता से मुक्त हो गये । चारों तरफ रानी की जय-जय कार गूँज रही थी। झाँसी में अपना राज्य प्राप्त होने पर रानी ने चैन की सांस नही ली बल्कि इसे मजबूत बनाने पर ध्यान देने लगी। रानी उस क्षेत्र की सर्वाधिक लोक प्रिया नेता बन गई थी। अंग्रेज यह महसूस करने लगे थे कि बिना झाँसी को दबाये उनका कल्याण सम्भव नहीं है। अतः झाँसी को दबाना आवश्यक था । सर हयूरोज 5000 सैनिकों तथा अनेक तोपों के साथ रानी के हौसलें को पस्त करने के लिये 6 जनवरी 1858 को चल पड़ा । सर हयूरोज का कार्यक्रम 6 जनवरी 1858 को सर हयूरोज मऊ से चला । रायगढ़, सागर ,गानपुर ,चदेंरी इत्यादि स्थानों पर विजय करती हुई यह सेना 20 मार्च को झाँसी के निकट पहुंची। झांसी इस समय प्रदेश के क्रान्तिकारियों का सबसे बडा गढ था। नगर के अन्दर बानपुर का राजा मरदन सिंह और अनेक राजा व सरदार रानी के सहायता के लिये मौजूद थें। [8]

रानी ने झाँसी के आसपास के क्षेत्रों को वीरान कर दिया । जिससे उन्हे कष्ट न सहना पडें । सारी भूमि उजाड दी गई । वहां एक भी पेड पौधा नही रहने दिया गया। उस समय न खेतों में अनाज की एक बाल भी, न कहीं पर घास का तिनका था। अगर टीकमगढ़ के राजा और सिन्धिया ने अंग्रेजो की सहायता न की होती तो सर हयूरोज को अपनी सेना सहित भागने के अलावा कोई उपाय न रहता। लेकिन इन देशद्रोही सरदारों ने अंग्रेजी सेना के लिये रसद और घोडों के लिये घास की पूरी व्यवस्था कर दी।अंग्रेजी सेना को बढते देख रानी लक्ष्मीबाई ने क्रान्तिकारियों का सेनापतित्व ग्रहण किया। एक मोरचा उसने अपने सामने तैयार कराया और रानी लक्ष्मीबाई के साथ झाँसी की सैकडों स्त्रियाँ तोप खानों और मैगजीनों मे काम करती दिखाई दे रही थी । झाँसी में आठ दिन लगातार संग्राम चला। 24 मार्च को सुबह सबसे पहले झाँसी की एक तोप ने जिसका नाम घनगरज था, कम्पनी की सेना के ऊपर गोले बरसाने शुरू किये । उसके बाद आठ दिन तक लगातार संग्राम होता रहा। झाँसी के इस घेरे के प्रारम्भिक चरण का आँखो देखा वर्णन एक दर्शक जो उस समय मौजूद था इस प्रकार लिखता है "25 मार्च से युद्ध प्रारम्भ हुआ, शत्रु ने रात -दिन तोपों से गोला की वर्षा किया और ,रात को तो दुर्ग तथा नगर तक भी गोलें पहुंचते थे । रात्रि एक भंयकर दृश्य के रूप में बदल जाती थी। उस अंधकार में 50-60 पौण्ड के गोलें देखने में टेनिस की गेंद की तरह छोटे किन्तु दहकते हुये अंगारों की भाँति लगते थे। ये गोले दिन के प्रकाश में तो दिखाई नही देते थें किन्तु रात्रि को एक भयानक दृश्य बन जाते थें" । अंग्रेजो ने दक्षिण द्वार का तोपखाना बन्द करा दिया । वहाँ का प्रतिकार भी समाप्त हो गया। रणबांकुरों का धीरज विचलित हो गया था, तभी पश्चिमी द्वार के तोपखानों के गोलदाजों ने तोपों का मुंह बदलकर चारों और अग्नि वर्षा पारम्भ कर दी और तीसरे पहर धड़ाके में उसने अंग्रेज गोलदाजों को उडा दिया, फलतः अंग्रेजी तोपखाना बन्द हो गया । इस प्रकार से संतुष्ट होकर गोलंदाज को चाँदी का टुकड़ा

© 2026 डॉ. जय प्रकाश सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पारितोषिक के रूप में दिया गया। पाँचवे-छठे दिन पुनः जमकर युद्ध हुआ। 4-5 घंटे तक रानी के तोपखाने द्वारा ऐसा प्रलय मचा जो न भूतों न भविष्यति था, इससे अंग्रेजो की अपार क्षति हुई । सातवें दिन झाँसी की दीवारे और तोपें शान्त हो गई । शत्रु ने तोपों की अग्नि वर्षा से दीवार गिरा दी किन्तु रातों-रात यह दीवार पूर्णताः सही कर दी गई। अंग्रेजो ने जब देखा कि कल की ध्वस्त दीवार आज फिर खड़ी हो गई और कल शान्त तोपखाना आज पुनः अग्निवर्षा करने लगा तो उनके भीतर हड़कम्प मच गया ।[9]

अंग्रेजी सेना में अव्यवस्था फैल गई और उसे काफी क्षति उठानी पड़ी। आठवें दिन अंग्रेजी सेना शंकर दुर्ग की और बढ़ी । अंग्रेजो के पास आधुनिक दूरबीन थी जिनकी सहायता से उन्होने दुर्ग के भीतर पानी के तालाब पर गोले बरसाना आरम्भ कर दिया , पानी के लिये आये हुए छःसात व्यक्तियों में से चार मारे गये । रानी लक्ष्मीबाई स्वयं हर स्थल पर स्वयं जाती तथा सैनिकों को उत्साहित करतीं । उधर तात्याटोपों अपनी सेना सहित यमुना नदी पार कर चररवारी के राजा के यहां पहुंचे,चरखारी के राजा ने स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने से इंकार कर दिया, तात्या टोपे ने चरखारी पर हमला किया । राजा से 24 तोपें छीन लीं और युद्ध के खर्च के लिये तीन लाख वसूल लिये । इसके बाद तात्या कालपी पहुंचे,कालपी में उन्हें रानी लक्ष्मीबाई का एक पत्र मिला, जिसमें रानी ने उससे झाँसी की मदद के लिये पहुंचने की प्रार्थना की थी। 1 अप्रैल को अंग्रेजी सेना ने साहस के साथ पीछे मुडकर तात्या के सेना पर हमला किया । तात्या के करीब डेढ़ हजार आदमी मारे गये, उसकी तोपे अंग्रेजों के हाथ आई । झाँसी की स्थिति अब और भी निराशाजनक हो गई फिर भी रानी लक्ष्मीबाई ने हिम्मत नही हारी । 3 अप्रैल को अंग्रेजी सेना ने झाँसी पर अन्तिम बार हमला किया । चारों ओर से एक साथ आक्रमण होने लगा। रानी अपने घोडे पर सवार सिपाहियों और अफसरों के हौसलें बढ़ाती हुई,उनमें जेवर और खिलअत बाँटती हुई बिजली की तरह इधर से उधर तक फिर रही थी। शत्रु नें पहले नगर के उत्तर की तरफ सदर दरवाजे पर जोर दिया। आठ स्थानों पर सीढ़ियां लग गई । रानी की तोपों ने अपना काम जारी रखा। झाँसी की दीवारों पर गोलो और गोलियों की बौछार उस दिन अत्यन्त भीषण था जिसके कारण अंग्रेजी सेना को पीछे हट जाना पड़ा। रानी की जीत उस दिन अवश्य हो जाती यदि दक्षिणी द्वार पर कुछ देश द्रोहियों ने अंग्रेजो का साथ न दिया होता । वहाँ दूल्हाजू और वीरअली अंग्रेजों से मिल गयें । दूल्हाजू ने आगे बढकर ओरछा फाटक का कुण्डा लोहे से मारकर खोल दिया जिससे अंग्रेज आसानी से भीतर प्रवेश कर गये और हत्या, दमन तथा लूट प्रारम्भ हो गया । रानी ने किले पर से नगर निवासियों के कत्लेआम और उनकी बरबादी को देखा। वह तुरन्त एक हजार सिपाहियों सहित अंग्रेजी सेना की तरफ लपकी । दोनो तरफ से भयंकर गोलीबारी होने लगीं,कम्पनी की सेना को कुछ दूर तक फिर पीछे हटना पड़ा, इतनें में किसी ने आकर रानी को सूचना कि, सदर दरवाजें का रक्षक सरदार खुदाबख्स और तोपखाने का अफसर सरदार गुलाम गौस खाँ दोनों मारे गये। रानी का दिल टूट गया एक बार उसने अपने प्राण देने का इरादा किया, किन्तु फिर अधिक सोच कर उसने झाँसी से बाहर कहीं और पहुंचकर स्वाधीनता संग्राम में सहायता पहुंचाने का निश्चय किया, झाँसी पर कम्पनी का कब्जा हो गया। उसी दिन रात में रानी लक्ष्मीबाई ने सदा के लिये झाँसी छोड दी। हथियार बांधे हुये मरदाना वेष में अपने दत्तक पुत्र दामोदर को कमर से कसे हुये वह किले की दीवार पर से एक हाथी की पीठ पर कूद पड़ी। वह अपने प्यारे सफेद घोडे पर सवार हुई। 10-15 सवार उसने अपने साथ लिये और कालपी की तरफ चल पडी । लेफ्टिनेंट बोकर ने कुछ चुने हुये सवार लेकर रानी का पीछा किया । रानी और उनके सवारों ने अपने घोडें को सरपट छोड़ दिया। बोकर और उसके सवार बराबर रानी का पीछा करते रहे। सुबह होते-होते रानी भाण्डेर नामक गाँव के पास ठहरी । गाँव से दूध लेकर उसने दामोदर राव को पिलाया । अंग्रेजी सैन्य दल बराबर पीछा कर रहा था। लेफ्टिनेंट बोकर का घोडा रानी के पास आ पहुंचा रानी ने तलवार से बोकर को घायल कर दिया । रानी के साथ के सवारों और बोकर के सवारों में तलवार के हाथ होने लगें । अन्त में घायल बोकर और उसके सिपाही हार कर पीछे हट गये । सुबह से दोपहर, दोपहर से तीसरा पहर और चलते शाम हो गई ,तारे निकल आयें बच्चे दामोदर को कमर से बाधे हुये, झाँसी से कालपी तक 102 मील से ऊपर का फासला तय करके रानी लक्ष्मीबाई ने कालपी में प्रवेश किया ।

रानी का प्रिय घोडा कालपी पहुंचते ही गिर कर मर गया । रानी ने बाकी रात कालपी में बिताई। सुबह रानी लक्ष्मीबाई नाना साहब के भतीजे राव साहब और सेनापति तात्याटोपें में परस्पर बातचीत हुई। जिस तरह सर हयूरोज मऊ से झाँसी की ओर रवाना हुआ था, उसी तरह जनरल हिटलाक 17 फररवरी 1858 को सागर इत्यादि से विजय करने के लिये जबलपुर से निकला था। औरछा का राजा,हिट्टलाक के साथ हो गया। सागर पर विजय प्राप्त करने के पश्चात हिंटलाक बाँदा की तरफ बढा । बाँदा के नबाब ने अनेक अंग्रेजो को अपने महल में आश्रय देख रखा था ,उसका व्यवहार उनके साथ अत्यन्त उदार था । किन्तु साथ ही वह अपने प्रान्त के क्रान्तिकारियों का एक मुख्य नेता था। शुरू में ही उसने बाँदा से अंग्रेजी राज्य के चिन्ह उखाड़ कर सम्राट बहादुरशाह को हरा झण्डा नगर के ऊपर लगा दिया था। हिटलाक को आते देखकर नबाब मुकाबले के लिये तैयार हो गया । कई लडाइयाँ हुई अन्त में नबाब की हार हुई। विजयी हिटलाक ने 19 अप्रेल को बाँदा में प्रवेश किया । नबाब अपनी कुछ सेना सहित नगर छोडकर कालपी की तरफ निकल गया । इसके बाद हिटलाक ने कर्वी के राव माधोराव पर चढाई कर दी। माधोराव दस साल का बालक था। रियासत का प्रबन्ध कम्पनी के नियुक्त किये हुये एक अधिकारी के हाथों में था। हिटलाक की आने का समाचार सुनकर वह स्वागत के लिये आगें बढा। हिटलाक और उसकी सेना ने नगर में प्रवेश किया । तुरन्त बालक माधवराव को कैद कर लिया गया और महल से गिरा दिया गया । राजधानी को लूट लिया गया और रियासत को कम्पनी के राज्य में मिला लिया गया । करबी के महल में सोने-चाँदी जवाहरात और कीमती हीरे भरे हुये थे । रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, बाँदा का नबाब ,शाहगढ और बानपुर के राजा व अनेक क्रान्तिकारी नेता उस समय अपनी सेना सहित कालपी में मौजूद थे । इस विशाल सैन्य दल के लिये शत्रु पर विजय प्राप्त कर सकना अधिक कठिन न होता किन्तु इनमें एक भी व्यक्ति ऐसा नही था जो सबको अपने अधीन कर सके । रानी सबसे योग्य थी किन्तु वह स्त्री थी और उसकी आयु केवल 20 वर्ष की थी । तात्या टोपें वीर और दक्ष सैनिक थे किन्तु वह साधारण घराने में पैदा हुआ थे फिर भी रानी लक्ष्मीबाई कुछ सेना लेकर अकेले कालपी से 42 मील दूर कंचगाँव पहुंची। कंचगाँव में फिर रानी की हार हुई। इस पराजय के बाद भी रानी की सेना कालपी लौट आई। लक्ष्मीबाई अपने घोडें पर सबसे आगे थी। इसके बाद स्वंय सर हयूरोज बाई तरफ से मुडकर लक्ष्मीबाई के मुकाबले के लिये बढा। अन्त में मैदान सर हयूरोज के हाथ रहा । 24 मई को सेना ने कालपी में प्रवेश किया। रानी लक्ष्मीबाई ,रावसाहब बाँदा के नबाब और थोडी सी

© 2026 डॉ. जय प्रकाश सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सेना सहित कालपी छोडकर निकल गई । क्रान्तिकारियों के पास न अब सामान था, न कोई ढंग की सेना और न कोई किला । फिर भी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे ने हिम्मत नहीं हारी, तात्या टोपे गुप्त रूप से कालपी से निकल कर ग्वालियर पहुंचा। ग्वालियर में उसने महाराजा सिंधिया की सेना और प्रजा को अपनी ओर कर लिया। [10] गोपालपुर में तात्या, रानी लक्ष्मीबाई, बाँदा के नबाब और राव साहब से फिर भेंट हुइ । लक्ष्मीबाई ने अब राव साहब को सबसे पहले ग्वालियर विजय करने की सलाह दी ताकि क्रान्तिकारियों का फिर से एक नया केन्द्र बन सके। 28 मई 1858 ई को सब क्रान्तिकारी नेता ग्वालियर के सामने पहुंच गये महाराजा सिन्धिया के पास एक पत्र भेजा-

“हम लोग आपके पास मित्र भाव से आ रहे है। आप हमारे और पुराने सम्बन्धों को याद कीजिये हमें आपसे सहायता की आशा है ताकि हम दक्षिण की तरफ बढ सकें।”

सिंधियां इन लोगों के साथ मित्रता दर्शाने के स्थान पर 1 जून 1858 को अपनी सेना और तोपों सहित उनके मुकाबले के लिये निकला। सिन्धिया के इरादे को देखकर रानी लक्ष्मीबाई तीन सौ सवारों सहित सिन्धियाँ की तोपों पर टूट पड़ी। किन्तु सिन्धिया की अधिकांश सेना अपने अफसरों सहित क्रान्तिकारियों की ओर आ मिली । जयाजी राव और उसके मंत्री दिनकराव को मैदान छोडकर आगरे की तरफ भाग जाना पडा । सिन्धिया के अर्थ सचिव अमरचन्द भाटिया ने सिन्धिया का सारा खजाना क्रान्तिकारी नेताओं के हवाले कर दिया ।

रानी लक्ष्मीबाई ने इस बात पर जोर दिया कि, सब काम छोडकर सेना को तुरन्त मैदान मे लाया जायें । लेकिन राव साहब ने इस सलाह की अवहेलना कर दिया। सर हयूरोज अपनी सेना सहित वेग के साथ ग्वालियर पर टूट पडा । ग्वालियर का राजा भी उसके साथ था । रानी लक्ष्मीबाई अपनी तलवार के साथ युद्ध भूमि में प्रवेश कर गई उन्होने पूर्व दिशा में स्थित रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया। रानी लक्ष्मीबाई के साथ उसकी दो सखियाँ मन्दरा और काशी घोडों पर सवार वीरता के साथ शस्त्र भाला लियें थीं । रानी का युद्ध भेदन करना बहुत कठिन था दूसरे दिन स्मिथ ने और अधिक सेना के साथ रानी का सामना किया । रानी ने अधिक पराक्रम और धैर्य के साथ अपने शिविर से बाहर आकर अंग्रेजों पर चढाई कर दीं।[11]

सर हयूरोज की सेना बहुत बड़ी थी । किन्तु रानी की सेना शत्रु पर बराबर आक्रमण करती । लेकिन अब उसका कोई लाभ नही था। सर हुएरोज ने अपनी ऊँट सेना को रानी के पीछे पहुंचा कर उसका व्यूह भेदन कर दिया। रानी ने उत्साह नहीं छोड़ा । रानी का अंग्रेजो ने पीछा किया वह कुछ अंग्रेजो को मारतें काटतें आगे की ओर बढ़ रही थी। इसी समय गोली उसकी सहेली मन्दरा को आकर लगी मन्दरा घोडें से गिर कर मृत्यु को प्राप्त हुई। रानी ने उस सैनिक को दे मारा जिसने उसकी सुकुमार सहेली मन्दरा का अपनी गोली का शिकार बनाया था। रानी भी अब कुछ समय की मेहमान थी मार्ग में एक छोटा सा नाला था। एक छलांग के बाद अंग्रेजो का रानी लक्ष्मीबाई को छू सकना असम्भव हो जाता किन्तु रानी का घोडा नया था। घोडा बजाय छलांग लगाने के नाले के इस पार चक्कर खाने लगा। अंग्रेज सवार अब और निकट आ पहुंचे रानी चारों तरफ से घिर गई । रानी उस समय बिल्कुल अकेले रह गई उसने अकेले ही उन सबका अपनी तलवार से मुकाबला किया । एक सवार ने पीछे से आकर रानी के सिर पर वार किया सिर का दाहिना भाग अलग हो गया । दाहिनी आँख भी निकल कर बाहर आ गई फिर भी रानी घोड़े पर डटी हुई अपनी तलवार चलाती रही इतने में एक बार रानी की छाती पर हुआ । सर और छाती दोनां से खून का फब्बारा छूटने लगा । बेहोश होते-होते रानी ने अपनी तलवार से उस गोरे सवार को जिसने सामने से रानी पर वार किया था, काट कर गिरा दिया। इसके बाद रानी की भुजा में और अधिक शक्ति न रह गई ।

रानी लक्ष्मीबाई का एक वफादार नौकर रामचन्द्रराव देशमुख उस समय पास था। घटनास्थल के निकट गंगादास बाबा की कुटिया थी । रामचन्द्रराव रानी को उठा कर उस कुटिया में ले गया । गंगादास बाबा ने रानी को पीने के लिये ठंडा पानी दिया और उसे अपनी कुटिया में लिटा दिया । चन्द मिनट के अन्दर ही रानी लक्ष्मीबाई का शरीर ठन्डा पड़ गया । रामचन्द राव ने रानी की अन्तिम इच्छा के अनुसार शत्रु से छिपा कर घास की एक छोटी सी चिता बनाई और उस पर रानी लक्ष्मीबाई के मृत शरीर को लिटा दिया । थोडी देर के अन्दर आग की लपटों में लक्ष्मीबाई के शरीर की केवल अस्थियाँ शेष रह गई। रानी की यह अन्तिम इच्छा पूरी हुई कि उनका शरीर अंग्रेज स्पर्श न कर सकें। रानी लक्ष्मीबाई जब युद्ध भूमि में थी तभी पीर गुल मुहम्मद ने रानी के समक्ष कुछ अंग्रेज सैनिकों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये, बाकी भाग गये । रानी का शरीर अभी भस्मीभूत हुआ ही था कि कुछ अंग्रेज सैनिक गिद्ध की तरह रानी की लाश लेने आये । लेकिन उस वीरांगना का शव उनके भाग्य में कहां था, गुल मुहम्मद और रघुनाथ सिंह ने घड़ाधड़ अंग्रेज सैनिकों पर प्रहार करना शुरू कर दिया। एक सैनिक ने रघुनाथ सिंह को गोली मार दी जिससे वीर रघुनाथ धराशाही हो गया। रानी की यादगार को कायम रखने के लिये उस वीर पठान ने कुछ पत्थर इकट्ठे कर समाधि तैयार कर ली, कुछ समय के बाद वहाँ अंग्रेज आ धमके उनके यह पूछने पर कि यह समाधि किसकी है। गुल मुहम्मद ने कहां यह एक उनके गुरू पीर की है। अंग्रेज चले गए। रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु पर जनरल ह्यूरोज ने कहा कि,” क्रांतिकारियों में यही अकेले मर्द थीं”।[12]

5. निष्कर्ष

1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसमें रानी लक्ष्मीबाई ने अद्वितीय साहस, नेतृत्व और बलिदान का परिचय दिया। उन्होंने झांसी की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध दृढ़ता से संघर्ष किया और विलय सिद्धांत का विरोध करते हुए यह सिद्ध किया कि भारतीय शासक अपनी स्वतंत्रता के लिए किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। रानी लक्ष्मीबाई का नेतृत्व, युद्ध कौशल और देशभक्ति 1857 की क्रांति को एक नई दिशा प्रदान करता है। उन्होंने न केवल अपने राज्य की रक्षा की, बल्कि अन्य भारतीयों को भी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। उनके साहस और बलिदान ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत की स्वतंत्रता केवल पुरुषों की ही नहीं, बल्कि महिलाओं की भी सहभागिता से संभव है।

संदर्भ

1. श्रीवास्तव, बी. के.: बुंदेलखंड का इतिहास (1831-1857 ई), नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ-118
2. उपर्युक्त: पृष्ठ. 118-119
3. पारसनीस, श्री बलवंत: झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, इलाहाबाद,1982, पृष्ठ.3-4
4. उपर्युक्त: पृष्ठ.30-31

© 2026 डॉ. जय प्रकाश सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

5. वर्मा, वृन्दावनलाल: झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, प्रभात प्रकाशन दिल्ली,2014, पृष्ठ-17
6. शर्मा, शशि: रानी लक्ष्मीबाई, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ- 12
7. द्विवेदी, डॉ दिनेश चंद्र: भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ,1991, पृष्ठ --10
8. श्रीवास्तव, बी. के.: बुंदेलखंड का इतिहास (1831-1857 ई), नई दिल्ली,2019, पृष्ठ-120
9. पारसनीस, श्री बलवंत: झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, इलाहाबाद,1982, पृष्ठ.127-128
10. उपर्युक्त: पृष्ठ, 197-98
11. श्रीवास्तव, भगवान दास: झांसी की रानी असमंजस में, शांति प्रकाशन भोपाल,1993, पृष्ठ,81-82
12. सिंह, मदन: बुंदेली लोकगीतों में 1857 की लोकलहर, लखनऊ, जुलाई 2015, पृष्ठ-17

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

डॉ. जय प्रकाश सिंह,असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बांदा, उत्तर प्रदेश।

अपने 14 वर्षों की सेवा में- 20 शोध पत्र राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोध-लेख प्रकाशित। 40 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता किया। 12 से अधिक बुक चैप्टर में लेख प्रकाशित। वर्तमान में इतिहास विभाग प्रभारी और पुस्तकालय अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं।

© 2026 डॉ. जय प्रकाश सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/